ग्रामीणों के लिए वरदान साबित हो रहीं बैंक सखी विनीता देवी

पलामू जिले के डालटनगंज प्रखंड स्थित पोलपोल शाखा में बैंक सखी के तौर पर काम करती हैं विनीता.

नेहा पांडेय

केंद्र सरकार के नोटबंदी के फैसले से पूरे देश में उथल पुथल का माहौल है. नोटबंदी के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक असर पड़ा है. जैसे वे अपनी फसल नहीं बेच पा रहे हैं, पुराने नोट बदली करने से सम्बंधित सही जानकारी लोगों को नहीं मिल रहा है. घरों में रखे पुराने नोट दलालों से बदली करवा ठगी का शिकार हो रहे हैं ग्रामीण. इन सभी मुसीबतों से घिरे ग्रामीण बैंकसखी से अपनी व्यथा बता रहे हैं और बैंक सखी उनको मदद कर रही हैं. ऐसी ही एक बैंक सखी हैं - विनीता देवी.

विनीता पलामू जिला के डालटनगंज प्रखंड में स्थित पोलपोल शाखा में बैंक सखी के तौर पर काम करती हैं. नोटबंदी के बाद विनीता देवी का काम अधिक बढ़ गया है. पहले वह शाम चार बजे तक अपने बैंक में कार्य करती थी, पर अब उन्हें बैंक में शाम छह बजे तक काम करना पड़ता है. विनीती देवी अपने गांव के लोगों को ऐसे समय में सहायता करने में गर्व महसूस करती हैं. जेएसएलपीएस द्वारा दी गयी ट्रेनिंग को श्रेय देते हुए विनीता कहती हैं "मै ज्यादा पढ़ी- लिखी नहीं थी परन्तु जेएसएलपीएस से ली गयी ट्रेनिंग के बाद मै अपने गाँव वालों को बैंको से संबंधित जानकारियां दे रही हूं. जैसे 500 व 1000 रुपये के पुराने नोट जमा करने की अंतिम तिथि 30 दिसंबर 2016 है. इससे ग्रामीणों को बैंक में पैसा जमा करने के लिए बैंकों में मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ रहा है. जिससे ग्रामीण चिंता मुक्त महसूस कर रहे है.

विनीता देवी सिया नामक महिला मंडल आजीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं तथा एमए की शिक्षा पूरी कर रही हैं. बुक कीपर एवं मास्टर बुक कीपर के पद पर कार्य करने के बाद विनीता के बैंक सखी के पद के लिए चयनित किया गया. अब तक बैंक से कुल 175 जमा खाता खुलवा चुकी हैं. विनीता देवी न सिर्फ महिलाओं को बल्कि उनके काउंटर पर आये पुरुषों का भी पूरी मदद करती हैं.

बैंक सखी के रूप में काम कर विनीता देवी अपनी घर की आर्थिक स्थिति ठीक करने व बच्चों को शिक्षा देने में सहयोग दे रही है. विनीता देवी इस पद को अपनी आजीविका का एकमात्र साधन बताती हैं और कामना करती हैं की आगे भी उन्हें और मौके मिलें जहां वे अपनी आजीविका बढा सकें एवं समाज में एक ऐसा उदहारण बन सकें जहां एक महिला अपने परिवार को चलाने के लिए किसी पुरुष पर निर्भर न रहे.

ग्रामीणों के लिए काम करना चाहती हैं तसलीमा बीबी

सबा खान

तसलीमा बीबी बोढाल पोखर गांव (पाकुड़ प्रखंड) में एक बुक कीपर के रूप में अपने सखी मण्डल का काम देखती थीं. पहले वह घर के कामों में उलझी रहती थी. इसके कारण गांव से बाहर क्या हो रहा है, मालूम नहीं होता था. वर्ष 2013 में बिहार से आईसीआरपी के सदस्यों ने इनके गाँव में सखी मण्डल बनाने और एनआरएलएम व जेएसएलपीएस के बारे बताया.

जानकारियां मिलने के बाद तसलीमा ने कुछ करने का मन बनाया. इन जानकारियों को तसलीमा ने गांव की दूसरी महिलाओं को भी बताया. इसके बाद गांव की बारह महिलाओं ने मिलकर एक सखी मंडल बनाया. सखी मंडल की कोई सदस्य को हस्ताक्षर करना भी नहीं जानती थी. ये महिलाएं बैंक जाने में डरती थी. कुछ बोल भी नहीं पाती थी. मंडली से जुड़कर इन महिलाओं के अंदर का सारा डर खत्म हो गया. इसके बाद मंडली को चक्रीय निधि से पंद्रह हजार रुपये मिली, जिससे इन्होंने छोटे-छोटे व्यवसाय शुरु किये. फिर सीएलएफ की ऋण राशि से बकरी पालन, खेती- बाड़ी इत्यादि का काम शुरु किया एवं मंडली में लेन-देन भी अच्छे से करने लगी. इसतरह ये महिलाएं आजीविका को रफ्तार दे रही हैं. नोटबंदी के दौरान तसलीमा अपनी मंडली सदस्यों को 500 तथा 1000 रुपये के पुराने नोट को बदलवाने में मदद की. तसलीमा को ग्रामीणों के लिए काम करना अच्छा लगता है. अपने ज्ञान से इनके काम को आसान करना चाहती हैं.

तसलीमा बीबी का बुक कीपर से आइपीआरपी बनने तक का सफर

तसलीमा, मंडली में पहले पुस्तक संचालिका थी. फिर खाता-बही का काम करने लगी. इसके बाद सीएफ बनी, कुछ समय बाद आरबी में उनका चयन हुआ. तसलीमा को दूसरे ब्लॉक में जाकर काम करने का अवसर मिला. इनके काम को देखते हुए सीएलएफ से सीधे आइपीआरपी के पद में चयन किया गया. तसलीमा अभी दुमका जिला के मसलिया ब्लॉक में आइपीआरपी के रूप में कार्यरत हैं. आज वह बहुत खुश हैं और सबसे यही कहना चाहती हैं कि अपने मंडली को अच्छे से चलाये और जीवन में आगे बढ़े.

> अगर मैं सखी मंडली से नहीं जुड़ती, तो एनआरएलएम का महत्व नहीं जान पाती और घर में ही बंद रहती, आज मैं खुशी से अपनी जिंदगी बिता रही हूं. मुझे आशा है की हम सब मिलकर एनआरएलएम की योजनाओं को अच्छी तरह अंजाम देंगे.

गांव- बोढाल पोखर **क्लस्टर- रोला ग्राम**

पंचायत- सीतारामपुर **प्रखण्ड- पाकुड़**